RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.07 | No.02 | February 2022 | pp. 12-16
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Buddhist notation in the Vakataka frescoes of Ajanta
अजन्ता के वाकाटककालीन भित्ति चित्रों में बौद्ध अंकन

*Dr. Shobharam Dubey

Assistant Professor, Department of Sanskrit, B. S. Educational Girls College, Sitapur

Abstract

The Ajanta paintings are mainly intended to depict various aspects of the life of Lord Buddha. The rest of the space between the stories has been decorated with vines, animal birds, geometric figures and other varied forms. Cave No. 9, 10, 19, 26 of the thirty caves of Ajanta are chaitya mandapas, while the rest are sangarams or viharas. At present there are only six cave paintings, in which cave nos.- 1,2,9,10,16 and 17 are there. From the point of view of time, these paintings are divided into three categories – Satavahana period paintings, Vakataka period paintings and Vakatota period paintings. The oldest paintings are of caves 9 and 10, which are related to the Hinayana sect.

Keywords: *Maya's dream, discussion with Asit Rishi, Gautam's learning, the vision of the old man and three other instruments, Sujata's pudding, sermon, Nanda's initiation*

Abstract in Hindi

अजन्ता के चित्रों का प्रायोजन मुख्यतः भगवान बुद्ध के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अंकन है। कथांकनों के अनन्तर शेष स्थान को लतापत्रक, पशुपक्षियों ज्यामितिक आकृतियों तथा अन्य वैविध्यपूर्ण रूप सज्जा से अलंकृत किया गया है। अजन्ता की तीस गुफाओं में गुफा सं0– 9,10,19,26 चैत्य मण्डप हैं, जबकि शेष संघाराम अथवा विहार हैं। वर्तमान में मात्र छः गुफाओं के चित्र अवशेष हैं, जिनमें गुफा सं0–1,2,9,10,16 व 17 हैं। काल की दृष्टि से इन चित्रों को तीन वर्गो में विभक्त किया जाता है–सातवाहन कालीन चित्र, वाकाटककालीन चित्र तथा वाकाटकोत्तरकालीन चित्र। सर्वाधिक प्राचीन चित्र गुफा सं0 9 व 10 के हैं, जो कि हीनयान सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं।

Keywords: *माया का स्वप्न, असित ऋषि से चर्चा, गौतम का विद्याभ्यास, वृद्ध तथा तीन अन्य निमित्तों का दर्शन, सुजाता की खीर, धर्मोपदेश, नन्द की दीक्षा ।*

Article Publication

Published Online: 20-Feb-2022

***Author's Correspondence**

Dr. Shobharam Dubey

Assistant Professor, Department of Sanskrit, B. S. Educational Girls College, Sitapur

dr.dubey80@gmail.com

10.31305/rrijm.2022.v07.i02.003

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

अजन्ता की यह गुफा गुप्त–वाकाटक कला का महत्वपूर्ण भण्डार है। इसमें बुद्ध के जीवन तथा जातक कथाओं से सम्बन्धित कथानकों का चित्रांकन किया गया है। बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित चित्रों में माया का स्वप्न, असित ऋषि से चर्चा, गौतम का विद्याभ्यास, वृद्ध तथा तीन अन्य निमित्तों का दर्शन, सुजाता की खीर, धर्मोपदेश, नन्द की दीक्षा आदि का समावेश हैं।

गुफा संख्या– 16

1. बुद्ध का तुषित स्वर्ग में उपदेशः– गुफा के बाईं ओर की सम्मुख भित्ति पर बुद्ध को तुषित स्वर्ग में उपदेश करते तथा वहॉ से लौटते हुए अंकित किया गया है। विश्वन्तर के रूप में जन्म लेने के पश्चात् बोधिसत्व तुषित स्वर्ग के एक देव श्वेतकेतु के रूप में उत्पन्न हुए। दूसरे जन्म तक बोधिसत्व इसी रूप में तुषित स्वर्ग में रहें। प्रथम दृश्य में बुद्ध तुषित स्वर्ग से अपने अन्तिम जन्म हेतु अवतरित होते दिखाए गये है। बादलों का अंकन पारम्परिक रीति से हुआ है। दूसरें दृश्य में बुद्ध सिंहासन पर बैठे हुए उपदेश दे रहे हैं तथा देवताओं का समूह उन्हें घेर कर बैठा है[1]।

2. नन्द की दीक्षाः– मण्ड़प के बाई ओर भित्ति पर नन्द की दीक्षा का दृश्य चित्रित है। बोधिप्राप्ति के पश्चात् बुद्ध कपिलवस्तु आये थे, जहॉ उन्होंनें अपने मौसेरें भाई नन्द को उसकी इच्छा के विरुद्ध प्रवज्या दिला थी। नन्द सदैव अपनी पत्नी सुन्दरी के आर्कषण में लीन रहता था। बुद्ध ने उसे स्वर्ग ले जाकर अप्सराऍ दिखाई तथा भिक्षुव्रत अपनाने पर उनकी

[1] अजय मित्र शास्त्री, अजंता, पृ0–88–89

प्राप्ति का आश्वासन दिया था। इस कथा में चित्रांकन में प्रथम दृश्य नन्द के राज्याभिषेक का है। दूसरें दृश्य में नन्द का सुन्दरी के लिए विषाद और बुद्ध के साथ उड़ते हुए दिव्य लोक की ओर प्रस्थान की कथा प्रदर्शित है। बाईं ओर इस कथा का उत्तरार्ध चित्रित है। इसमें नन्द दीक्षित होने पर एक सेवक द्वारा उसका मुकुट सुन्दरी के पास लाया जाता है, जिसे देखकर वह शोक से मुर्छित हो जाती है। चित्र में सुन्दरी पर्यंक पर निढाल अवस्था में एक कुसन के सहारे बैठी दिखाई गयी हैं, पीछे से एक दासी उसके बॅगलों में हाथ ड़ाले बैठने में सहायता कर रही है। बगल में एक अन्य दासी बहुभंग मुद्रा में एक लम्बे दण्ड वाला पंखा लिए खडी है। एक स्त्री सुन्दरी के दायी ओर उसका हॉथ पकडे बैठी है, सम्भवतः वह नाड़ी देख रही है। वही एक कुब्जसेवक भी है, जो चिंतित मुख मुद्रा में चित्रित है। द्वार के समीप दो स्त्रियॉ है, जिनकी मुद्रा से प्रतीत होता है कि इसके मध्य कोई गम्भीर वार्तालाप हुआ है। वही वातायन के ऊपर बैठा एक मोर अपनी गुर्दन झुकाकर उनके वार्तालाप को सुनने का प्रयत्न कर रहा है। दोनो स्त्रियों में से एक के हॉथ में औषधि का पात्र है, और दूसरे हाथ की तर्जनी और मध्यमा से दो का संकेत कर रही है। दूसरी स्त्री कुछ मॉग रही है। शायद पहली स्त्री वैद्य है और सुन्दरी की स्थिति देखकर वापस लौट रही है। दूसरी स्त्री उनसे कुछ मॉग रही है, जिस पर वह संकेत के साथ सम्भवतः यह कह रही है कि सुन्दरी दो घड़ी अथवा दो दिनो की मेहमान है। इन दोनो का यह वार्तालाप स्थिति की गम्भीरता को प्रकट करती है[2]। वर्णिकाभंग, तीव्रभाभिव्यक्ति और सफल कथोपकथन का जैसा प्रर्दशन है, वैसा चित्रांकन अन्यत्र नही मिलता हैं। ग्रिफिथ के शब्दों में शोक, करूणा तथा स्पष्टरूपेण कथोपकथन की पद्धति की दृष्टि से प्रस्तुत चित्र को उन्नीस सिद्ध करने वाली कोई कृति कला के इतिहास में नहीं मिलेंगी[3]।

3.आकाशचारी अप्सराः– मण्ड़प के वाईं ओर भित्ति पर एकदम दाईं तरफ हवा में उड़ती अप्सरा का दर्शनीय चित्र अंकित है। इस अप्सरा की अल्कावली लहलहाती हुई अंकित है। केशपास उससे लटकती ललाटिका, जूड़े में गूँथी पुष्पमाला, कान में झूलते कुण्ड़ल, बड़े मणियों की एकावली, बाहुओं में केयूर तथा कलाइयों में कंकण पहने यह अप्सरा अत्यन्त भव्य दिखाई देती है। पट्टिकाओं से युक्त अर्धोरूक भलीभॉति चित्रित हुआ है[4]।

4. अजातुशत्रु एवं बुद्ध की भेंटः– दीघनिकाय के विवरणानुसार मगध नरेश अजातशत्रु पितृ हत्या की ग्लानि से मुक्ति के लिए वैद्य जीवक के आम्रवन में महात्मा बुद्ध से भेट की थी तथा उनसे समाधान पाकर संतुष्ट हुआ था[5]। अन्तराल के बाईं ओर की सम्मुख भित्ति पर अजातशत्रु और बुद्ध की भेंट का सुन्दर दृश्य अंकित है। एक बड़े जुलूस के साथ राजा अजातशत्रु और बुद्ध की भेंट का सुन्दर दृश्य अंकित है। एक बड़े जुलूस के साथ राजा अजातशत्रु बुद्ध से मिलने के लिए जाते हुए चित्रित है। जुलूस में विभिन्न अलंकरणों से सज्जित हाथी, प्यादें, बॉसुरी तथा तुरही बजाते वादक आदि सम्मिलित है। कुछ हाथियों पर स्थियॉ भी सवार है। राजा का हाथी सबसे प्रभावशाली रूप से चित्रित है[6]।

5. बुद्ध का धर्मोपदेशः– अंतराल की सम्मुख भित्ति पर दाईं ओर धर्मोपदेश करतें हुए बुद्ध का चित्र है, इसका काफी भाग नष्ट हो चुका है इसमें कई किरीटधारी पुरूषों तथा अत्यन्त श्रद्धापूर्वक उपदेश सुनते हुए भिक्षुओं का अंकन है[7]।

6. बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित चित्रः– इस गुफा के दाईं दीवार के मध्य भाग पर बाऍं माया देवी का स्वप्न, असित ऋषि की भविष्यवाणी और सिद्धार्थ का विद्याभ्यास करना चित्रांकित है। इस चित्रावली के प्रथम दृश्य में राजमहल में मायादेवी एक पर्यंक पर सोई हुई है, समीप ही दासिया लेटी है। इस चित्र के ही समीप मायादेवी शुद्धोधन को अपना स्वप्न बताती चित्रित है। दूसरें दृष्य में ऋषि असित नवजात बालक को गोंद में लेकर एकाग्रतापूर्वक निरीक्षण करने के उपरान्त इसका भविष्य बता रहे है। इसके बाद दृश्य में सिद्धार्थ कुछ बच्चों के साथ विद्याभ्यास करते चित्रित है। इसके निचले भाग में प्रत्यालीढ़ मुद्रा में खड़े सिद्धार्थ द्वारा धनुर्विद्या के अभ्यास का चित्र चित्रित है। इसके आगें बाये से दायें क्रमशः दो अन्य दृश्य है, जिनमें प्रथम दृश्य सिद्धार्थ द्वारा वृद्ध, व्याधिग्रस्त, मृत तथा सन्यासी आदि चार निमित्तों के दर्शन का है, जबकि दूसरें दृश्य में बोधि प्राप्ति के पश्चात् बुद्ध त्रिपुरूष व भल्लिक से शहद एवं चावल के अपूप तथा सुजाता से खीर ग्रहण करते चित्रित है। इसके पश्चात् बुद्ध द्वारा राजगृह गमन का दृश्य है। राजगृह के सपाट छतों वाले घर उन पर लकडी के छज्जे, जाल वातायन आदि बहुत खूबी से चित्रित किये गये है[8]।

---

[2] वही फलक–51–53,62,
[3] ग्रिफिथ, केव टेम्पल्स ऑफ इण्डिया, पृ0–307
[4] गुलाम यासदानी, पूर्वोक्त , ,खण्ड–3 पृ0–56
[5] देवला मित्रा, पूर्वोक्त, पृ0–91, वी0सी0 पाण्डेय, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास,पृ0–220
[6] गुलाम यासदानी, पूर्वोक्त, खण्ड–3, पृ0–58–99
[7] वही, पृ0–60, वी0वी0 मिराषी, वाकाटक, राजवंष का इतिहास तथा अभिलेख, पृ0–103
[8] वी0वी0 मिराषी, पूर्वोक्त, पृ0–102, यासदानी, पूर्वोक्त, खण्ड–3, पृ068–70

गुफा–संख्या–17:–

अजन्ता की अन्य गुफाओं की अपेक्षा इस गुफा में चित्र विस्तृत अंकन व भव्यता के साथ अधिक्य रूप से बने है। बुद्ध से सम्बन्धित चित्रों की अपेक्षा जातक कथाओं के चित्रांकन को प्रमुखता मिली है। इसी गुफा के चित्र सर्वाधिक सुरक्षित दशा में है।

1. संसार–चक्रः– बरामदें के बाईं भित्ति में एक भव्य चित्र है, जिसे संसार चक्र का प्रतीक माना गया है[9]। कतिपय विद्वानों ने इसें क्रान्ति चक्र मानकर गुफा का नाम 'क्रान्ति–चक्र गुफा' नाम दिया था[10]। परन्तु यह चित्र स्पष्टतः संसार का प्रतीक है। भगवद्गीता में भी संसार को चक्र की उपमा दी गई है[11]। इस विशाल चक्र को पकड़े हुए दो हाथ ऊपर की ओर दिखाई देते हैं। एक ओर हरें रंग की 'मणिभद्र' नामक आकृति चित्रित है। मूलतः इस चित्र की योजना आठ भागो में विभक्त थी, परन्तु चयनित क्षेत्र में वातायन के आने से केवल पॉच भाग चित्रित किये जा सके है। चक्र में केन्द्र से लेकर परिधि तक अरें (चक्र की तीलियाँ) बने हुए है जिसके मध्य में हाट–बाजार, उद्यान, गोष्ठी, किसानों की बस्ती, राजमहल के दृश्य, प्रेमी युगल, नृत्य वाद्य की संगितियाँ, अरण्यों में साधानारत ऋषिगण आदि अंकित है। जबकि चक्र के केन्द्रीय भाग में वानर, मिथुन, ऊॅट, कुम्हार आदि पशु व मानवाकृतियों का अंकन है। चक्र के दायी ओर सर्पाकार नदी के प्रवाह जैसी आकृति वाला व्याल चित्रित है। जिसे भयभीत मनुष्य अपने साजों–सामान सहित इधर–उधर भाग रहें है। इस प्रकार के चित्र तिब्बती परम्परा में भी देखने को मिलते है। सम्भवतः इसके माध्यम से किसी दार्शनिक विचार को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है[12]।

2. आकाशचारी इन्द्र तथा अप्सराएँ:– मुख्य द्वार के बाईं तथा दायी ओर हवा में उड़ते शक्र, गन्धर्व तथा अप्सराएँ अंकित है। इन्द्र के आगे–पीछे बाँसुरी, मंजीरें, वीणा वाद्य आदि बजातें हुए अप्सराऍ चित्रित है। इन्द्र किरीट मुकुट, कुण्डल एकावली, जडाऊ हार, मुक्ता–यज्ञोपवीत, केयूर, कटर, असिपुत्रिका, तथा असि से सज्जित है। आड़ी धारियों वाले अधोवस्त्र पहने इन्द्र के वाये उठे हुए हाथ तथा भूमि के समानान्तर मुडें दाएँ हाथ में कुछ अस्पष्ट वस्तुएँ है[13]। हवा में उड़ती अप्सरा का अंकन बहुत सुन्दर है। उसके शिर पर बॅधें शिरोभूषण से लटकती मोतियों की लड़ियॉ, मस्तक के कुछ ऊपर बॅधा ऊष्णीशपट्ट, कानों में लटकतें कुण्डल, बडी–बडी गोल तथा आयताकार मणियों का कंठा नीलमणि के जडाऊ पदक से अलंकृत मुक्ताहार, केयूर तथा रत्नजटित कटकों का चित्रण बहुत ही सुन्दर तथा वास्तविक रूप में हुआ है। अप्सरा के उड़ने की गति की व्यंजना उसके आभूषणों के दायी ओर कुछ तिरछे रूप में किये गये चित्रण से की गयी है। हार बॉधने का फीता भी पीठ के पीछे से निकलकर दॉईं ओर फहराता हुआ अंकित किया गया है। अप्सरा के दोनो हाथों में मंजीरा है। इस चित्र के आस–पास का भाग नष्ट हो गया है[14]।

3. मानुषीबुद्धः– मुख्य द्वार की द्वार शाखा पर सात मानुषी बुद्धों–विपश्यी, शिखी, विश्वभू, कुकुच्छंद, कनक मुनि कश्यप तथा शाक्यमुनि एवं भावी बुद्ध मैत्रेय का सुन्दर चित्रण है। ये सभी मानुषी बोधिवृक्षों के नीचे बैठे हैं[15]।

4. नलगिरी दमनः– बुद्ध के आठ चमत्कारों में से एक नलगिरी हाथी का दमन है। बुद्ध के सौतेले भाई देवदत्त ने अजातशत्रु के साथ मिलकर राजगृह में बुद्ध के ऊपर नलगिरी नामक पागल हाथी छुडवा दिया, परन्तु वह बुद्ध के सम्मुख आकर शान्त हो गया। गुफा के प्रवेशद्वार की दाईं ओर महल में अजातशत्रु तथा देवदत्त षड़यन्त्र रचते चित्रित किये गये है। नीचे बाजार के रास्ते में स्त्री–पुरुष हैं। पागल हाथी के भय से दुकान हटातें व्यापारी, छिपतें लोग तथा छज्जों पर आतंकित स्त्रियॉ खडी है। बुद्ध के सम्मुख नत हाथी, तथा उसका मस्तक थपथपाते बुद्ध एवं अन्त में बड़े समुदाय को उपदेश देते बुद्ध चित्रित है[16]। दृश्य–संयोजन भाव–प्रदर्शन तथा प्रभावी रंगयोजना के गुणों से युक्त यह चित्र अनुपम युक्त यह चित्र अनुपम है।

5. बुद्ध–जीवन के दृश्यः– अंतराल की बाईं भित्ति पर बुद्ध के तुषित स्वर्ग में उपदेश, एवं सारिपुत्रप्रश्न का चित्रण है[17]। गर्भगृह के दोनो ओर क्रमशः राहुल की दीक्षा तथा श्रावस्ती का चमत्कार चित्रित है[18]। इनमें राहुल की दीक्षा का चित्र सबसे

---

[9] यासदानी, पूर्वोक्त, खण्ड–4, पृ0–21, फलक–4अ–7अ
[10] अजय मित्र शास्त्री, पूर्वोक्त, पृ0–93
[11] एवं परिवर्तित चक्रं नानुवर्त्रयतीह यः। (भगवद्गीता, 3.16)
[12] अजय मित्र शास्त्री, पूर्वोक्त पृ0–93
[13] पंत प्रतिनिधि, अजिंठा, चित्र–59
[14] पंत प्रतिनिधि, अजिंठा, चित्र–61, मदनजीत सिंह, पूर्वोक्त फलक–69
[15] छेवला मित्रा, पूर्वोक्त, पृ0–52
[16] पूर्वोक्त, पृ0–54
[17] यासदानी,पूर्वोक्त, खण्ड–4, पृ0–54, फलक–27सी0–37, मदनजीत सिंह, पूर्वोक्त, फलक–49,71–72,77

भव्य तथा सर्वोत्तम चित्रों में से एक है। इस चित्र में बुद्ध के कपिलवस्तु वापस लौटने पर यशोधरा राहुल को आगें कर उसे दायभाग माँगने के लिए प्रेरित करती है। इस बुद्ध अपना भिक्षापात्र आगे बढाकर धर्म में दीक्षित करने की बात कहते है। चित्र में बुद्ध आकार में यशोधरा तथा राहुल से कई गुना बड़े दिखाएँ गये है, जोकि उनकी अध्यात्मिक महत्ता को प्रदर्शित कर रहा है। आकृतियों की सुडौलता, चेहरें के भाव तथा सशक्त रंगविधान चित्र की मनोहरता में चौगुनी वृद्धि कर रहे हैं।[19]

5. सिंहलावदानः– दायी भित्ति के अगले भाग में सिंहलावदानकी कथा का चित्रित की गयी है। 'दिव्यावदान' तथा 'महावस्तु' में सिंहालावदान की कथा वर्णित है। 'वलाहस्य जातक' में भी इस कथा के कुछ अंश मिलते है। इस कथा के अनुसार सिंहल नामक एक श्रेष्ठिकुमार ने 'ताम्रवर्णी' नामक द्वीप पर आक्रमण कर वहॉ के नरमॉसभक्षी राक्षसों को मार भगाया और स्वयं उस द्वीप का राजा बन गया, तबसे वह द्वीप सिंहल द्वीप कहलाने लगा। परन्तु इस गुफा का चित्रांकन उपरोक्त साहित्यक विवरण से तनिक भिन्न है[20]। चित्र में निचले दाएँ छोर से कथा आरम्भ होती है। इसमें सिंहल के साथ यात्रा कर निकले पॉच सौ अन्य व्यापारियों का जहॉज दुर्घटनाग्रस्त नष्ट हो जाता है। इस दृश्य के ऊपर राक्षसियों के द्वीप में पहुॅचे यात्रियों को सुन्दर स्त्री का रूप धारण कर लुभाती राक्षसियॉ अंकित हैं। सिंहल संकट का अनुभव कर आकाशचारी घोड़े के रूप में उत्पन्न बोधिसत्व का कहना मानकर उनकी पीठ पर बैठ जाता है। एक द्वार के निकट पहुॅचकर सिंहल बोधिसत्व के सामने घुटने के बल बैठा कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा है, शेष यात्री राक्षसियों द्वारा खा लिए गये है। एक राक्षसी पीछा करते हुए सिंहल के घर में एक बच्चे सहित घुस जाती है, तथा स्वयं को उसकी पत्नी बताने लगती है। सिंहल के अस्वीकार करने पर वह राजा के पास फरियाद लेकर जाती है, जहॉ राजा उस पर मुग्ध होकर उसे अपने पास रख लेता है। राक्षसी ने धीरे–धीरे अपने पंजे गडाएँ तथा राजा समेत सबको खा गयी। जब महल पर गिद्ध मडराने लगे, तो सिंहल ने वहॉ प्रवेश कर सभी राक्षसियों को मार भगाया। इसके पश्चात् सिंहल द्वीप में सेना भेंजकर सभी राक्षसियों का नाश करके वह सिंहल द्वीप का राजा बन जाता है[21]। यह चित्र भी सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है।

6. प्रसाधिकाः– सिंहलावदान की कथा के बाद कुड्यस्तम्भ पर प्रसाधन का सुप्रसिद्ध दृश्य चित्रित है। इस चित्र में दो परिचारिकाओं और एक कुव्ज सेवक के मध्य त्रिभंग मुद्रा में खड़ी एक स्त्री बाएँ हाथ में लिए एक दर्पण में मुख निहारती चित्रित है। बाईं ओर की परिचारिका चामरधारिणी तथा दायी ओर की करण्डवाहिनी है। स्त्री अत्यन्त सीमित वस्त्रों एवं विविध आभूषणों से युक्त है। इस चित्रांकन का किसी कथा से स्पष्ट सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका। यह चित्र भी अजन्ता की श्रेष्ठ कृतियों में से एक है[22]।

7. अलंकरण सम्बन्धी चित्रः– अन्य स्थलों की भॉति इस गुफा में अवकाश अंतरालों का विविध अलंकरणाभिप्रायों से सज्जित किया गया है। इनमें लतापत्रक, ईहामृगों, विविध दरबारी दृश्यों, पशु–पक्षियों तथा ज्यामितीय आकृतियों का अन्तर्भाव है। छत पर अलंकरणाभिप्रायों से युक्त एक के बाद एक बनाये गये वृत्तो से निर्मित अनेक सुन्दर मण्डप विशिष्ट है।छत के मध्य में छः मानवाकृतियों का चित्रण है, जिनके केवल छः हाथ बनाये गये है, परन्तु उनका चित्रण इस प्रकार किया गया है, जिससे वह देखने में बारह प्रतीत होते है। बरामदे की छत में वर्तमान में भी मूल रंग की चमक तथा ताजगी दिखाई देती है[23]।

गुफा संख्याः–6

इस गुफा के अधिकांश चित्र धुऍं तथा गर्द से बुरी तरह प्रभावित है। बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित दो दृश्यों के अतिरिक्त शेष चित्रों के कथानक की पहचान का कार्य वर्तमान में भी अनुसन्धान का विषय है। गुफा के बाईं तथा दाईं दीवार पर दो दृश्य न्यूनाधिक रूप में दृष्टिगत है, जिनमें प्रथम दृश्य में मार–आक्रमण का प्रसंग चित्रित है। इसी गुफा से ज्ञात हुआ कि अजन्ता में चित्रकर्म से पूर्व मिट्टी के पलस्तर पर चूने की तह लगाकर चित्राधार तैयार किया जाता था। इस गुफा में चित्र बनाने के लिए चित्राधार पर पहले काला रंग लगाया गया था, जोकि चित्रों की काली पृश्ठभूमि तथा चित्रों में काले रंग की प्रधानता का मुख्य कारण है[24]। अन्तराल की बाईं भित्ति पर उपस्थित बुद्ध प्रतिमा पर जिप्सम की तह तथा धूपधानी और कमल के फूल हाथों के लिए घुटने के बल बैठे उपासक का चित्र महत्वपूर्ण है। उपासक के हाथ में चित्रित धूपदानी गोलाकार, ढ़क्कनाकार, लम्बे हत्थे वाली है, जबकि जिप्सम का पलस्तर संगमरमर की आभा देता है। चित्र सुडौल रेखाओं तथा सानुपातिक आकृति

---

[18] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–66, फलक–38–40ए, पंतप्रतिनिधि, पूर्वोक्त, चित्र–71
[19] अजयमित्र शास्त्री, पूर्वोक्त, पृ0–97
[20] अजयमित्र शास्त्री, पूर्वोक्त, पृ0–99
[21] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–81
[22] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–82–95, मदनजीत सिंह, पूर्वोक्त, फलक–15, 75
[23] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–103–106, देवला मित्रा, पूर्वोक्त, पृ0–74–75
[24] एस0आर0राव, दि इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इण्डिया, जून 22,1975, पृ0–12

संयोजन के आधार पर वाकाटक शैली में रखा जाता है, परन्तु अधिकांश भाग अनुपस्थित होने के कारण कथानक की पहचान कठिन है[25]।

एक अन्य स्थल पर एक स्त्रीमुख अवशिष्ट है, जो अत्यन्त आकर्षक है। कुछ द्वारपालों के भी चित्र दिखाई देतें हैं। एक द्वारपाल के चित्र में वस्त्रों की प्रौढ़ रेखाएँ तथा गजशुण्डाकार पुष्ट बाहु, मॉसल हाथ तथा उँगलियों की मुद्राएँ दृष्टिगत है। कलापारखियों के अनुसार वाकाटककालीन चित्रकला की परिपक्व शैली की चरम सीमा दृष्टिगत् होती है[26]।

[25] अजयमित्र शास्त्री, पूर्वोक्त, पृ0–87–88

[26] राय कृश्णदास और आनन्द कृश्ण, अजन्ता के चित्रकूट, पृ0–21